Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 68, December 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 68, दिसंबर 2020

'जारी है लड़ाई' बनाम मुकम्मल आवाज

बृजेश प्रसाद (शोधार्थी)
मास्टर्स – जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय
एमफिल – गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
पीएचडी - प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय कोलकाता
Email: prasadb045@gmail.com दूरभाष 7011645739

सारांश

आज समाज जिस त्रासद स्थितियों से जूझ रहा है उसे चित्र की तरह प्रस्तुत करने की कला संतोष पटेल की कविताओं में देखी जा सकती है। 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह में सार्थक बदलाव का स्पष्ट स्वर साफ-साफ दिखाई देती है। वहीं दूसरी और छल-कपट, पाखंड और लालची फ़ितरत से भरे चरित्रों के प्रति गहरा आक्रोश भी कविताओं में देखी जा सकती है।

'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह में सामयिक और ज्वलंत मुद्दों पर जागरूकता के साथ सचेत होकर कवि ने प्रहार किया है। कविता की भूमिका में कवि कहता है – 'समाज का हर क्षेत्र से प्राप्त हुए अनुभव मुझे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक विसंगतियों के विरुद्ध चुप रहने की इजाजत नहीं देती।'

बीज शब्द – जारी है लड़ाई, संतोष पटेल, यथार्थपरक कविताएँ, संघर्ष

आमुख -

जीवन को पूरी जिन्दादिली से जीने और अपने समाज के लिए 'जारी है लड़ाई' महसूस करने वाले संतोष पटेल का जन्म 4 मार्च सन् 1974 में बिहार प्रदेश के पश्चिम चंपारण जिला मुख्यालय बेतिया के सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना के घर हुआ। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा गाँव में संपन्न हुआ। उच्च शिक्षा में इन्होने अंग्रेजी, हिंदी और भोजपुरी विषय में स्नातकोत्तर व अंग्रेजी में एमफिल एवं इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से पीएचडी की। वर्तमान समय में आप दिल्ली सरकार में कार्यरत हैं।

इनकी कविताएँ, आलेख और कहानियाँ हिंदी, अंग्रेजी और भोजपुरी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। अभी तक इनके दो भोजपुरी भाषा में काव्य संग्रह 'भोर-भिनुसार' और 'अदहन' प्रकाशित हो चुके हैं। हिंदी में इनका पहला काव्य संग्रह 'शब्दों की छाँव' जो मंच को केंद्र में रखकर गीतात्मक शैली में लिखा गया। ये पूर्वाकूर, डिफेंडर, भोजपुरी जिंदगी और उपासना समय जैसी अनेक पत्रिकाओं के साहित्यिक संपादक भी रह चुके हैं।

'जारी है लड़ाई' इनका दूसरा काव्य संग्रह है। जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है। जिसमें लगभग 58 कविताएँ संकलित हैं। कवि ने अपने जीवन में जो विषमता और जटिलता को महसूस किया उसे प्रस्तुत संग्रह में उकेरने की कोशिश की है। 'जारी है लड़ाई' यह लड़ाई आज से नहीं सदियों से लड़ी जा रही है। यह लड़ाई हक की लड़ाई है, समता की लड़ाई है, शोषण मुक्त समाज और सामाजिक न्याय की लड़ाई है।

'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह में सामयिक और ज्वलंत मुद्दों पर जागरूकता के साथ सचेत होकर कवि ने प्रहार किया है। कविता की भूमिका में कवि कहता है – "समाज का हर क्षेत्र से प्राप्त हुए अनुभव मुझे सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक विसंगतियों के विरुद्ध चुप रहने की इजाजत नहीं देती।"[1]

कवि राकेश पटेल 'कबीर' लिखते हैं – "संतोष की कविताओं को पढ़ते हुए एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वे मुद्दों के माध्यम से सीधा अटैक करते हैं। इसलिए मैं उन्हें 'अभिधावादी' या 'डायरेक्ट अटैकवादी' कहता हूँ।"[2]

आज समाज जिस त्रासद स्थितियों से जूझ रहा है उसे चित्र की तरह प्रस्तुत करने की कला संतोष पटेल की कविताओं में देखी जा सकती है। 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह में सार्थक बदलाव का स्पष्ट स्वर साफ-साफ दिखाई पड़ती है। वहीं दूसरी और छल-कपट, पाखंड और लालची फ़ितरत से भरे चरित्रों के प्रति गहरा आक्रोश कविताओं में देखा जा सकता है –

नहीं हैं पसंद
मुझे मंदिरों में बजने वाली घंटियाँ
क्योंकि परोसती हैं ये
पाखंड/अंधविश्वास
बनाती हैं अकर्मण्य और भाग्यवादी।"[3]

'जारी है लड़ाई' में संकलित कविताएँ सामाजिक जड़ता, अंधविश्वास, पाखंड, आर्थिक दासता और शोषण के विरुद्ध कदम-कदम पर अंगार उगलती है। जो गरीब, असहाय, पीड़ित, शोषित जन समुदाय की आवाज बनकर पूंजीवाद, ब्राह्मणवाद एवं भ्रष्ट राजनीति का खुलकर विरोध करती है। उन कविताओं में 'मुझे जो घंटियाँ पसंद हैं', जन्मों की व्याख्या, 'गायब है', 'नव दलित', 'राजनीति साहित्य की', 'एक गिरमिटिया का हिन्दू बन जाना' आदि में स्पष्ट स्वर उभर कर आया है -

"सुनो ! देखो !
उनकी घृणा ने मुझे मुहब्बत करना सिखाया
उनके तिरस्कार ने प्रतिकार करना सिखाया
उनके विरोध ने प्रतिरोध करना सिखाया
उनके भेदभाव ने मुझे समानता सिखलायी।"[4]

'माउन्टेनमैन दशरथ माँझी', 'एक चिड़िया' और 'एक शब्द' कविता के माध्यम से कवि ने आम-जनमानस के धार्मिक और जाति शोषण की विभीषिका को उजागर किया है। 'जारी है लड़ाई' में संकलित कविताएँ हमारे भीतर सौन्दर्य की नई-नई चेतनाएँ ही उजागर नहीं करती बल्कि वह हमें गहरे तक विचलित भी करती है –

"संस्कारों के ढहते किलों ने नीचे
दब गयी है/एक चिड़िया/उसकी चहक
बहशी दरिंदों की शिकार/
सुनहले सपनों के सूरज की किरण न देख सकी
न देख सकी कल का प्रभात।"[5]

संतोष पटेल का चिंतन-मनन बड़ा ही गंभीर, यथार्थपरक एवं समाचीन है। 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह में जादुई शक्ति का आभास होता है, जिससे पाठक-श्रोता का मन-मस्तिष्क रचना के भाव-प्रवाह के साथ बंध-सा जाता है। इन कविताओं में ऐसी सामाजिक-दृष्टि है जो अपने दौर की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिघटनाओं की छानबीन करती है। एक संवेदनशील हृदय का कवि सिर्फ अपनी तकलीफें महसूस नहीं करता बल्कि उसका दुःख-दर्द दुनियां के तमाम वंचित, दलित, स्त्री, आदिवासी, शोषित, तबकों का दुःख दर्द अपना बन जाता है –

"पैसे का खेल/अद्भुत तमाशा
किन्तु परिणाम/केवल निराशा
जहाँ आधी रोटी के लिए
बिलखते बच्चे और सिसकती आँखे हैं।"[6]

संतोष पटेल अपने समय में उपस्थित रहने वाले सजग कवि हैं। वे अपनी कविताओं में नए भारत की प्रतिष्ठा का स्वप्न देखते हैं। जन-संवेदनाओं, उसके सुख-दुःख, शोषण-उत्पीडन, हर्ष-विषाद, संघर्ष और सौन्दर्य को कविता के माध्यम से संप्रेषणीयता देने की दृष्टि से 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह की उपलब्धियां अगली पीढ़ी के लिए उत्प्रेरक का काम करेंगी। इसी उम्मीद के साथ कवि कहता है -

"जग रहा है बहुजन
हरायेगा इस अंतिम युद्ध में
मानवताविरोधी उन ताकतों को
जो हैं खतरा
देश की एकता और अखंडता के लिए।"[7]

प्रो.शत्रुध्न कुमार कविता की भूमिका में लिखते हैं – "भारत में बहुजन कौम के बिना इस देश ने निवासियों को आजादी मिलना मुश्किल है। आज बीच-बीच में यह सुखद क्षण देखने को मिल रहा है कि बहुजनों के बीच बहुजन आन्दोलन की समझ बन रही है और इसी का परिणाम है नव उदित कवि संतोष की रचना- 'जारी है लड़ाई'।"[8]

संग्रह की कविताओं में जो सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि है, वह समकालीन घटनाओं की सख्ती से छानबीन करती है। इन कविताओं से गुजरते हुए हम पाते हैं कि संतोष पटेल अपनी वैचारिकी और अनुभव को लेकर आत्ममुग्ध नहीं हैं, बल्कि वे ठोस आत्मीयता के हिमायती हैं। 'जारी है लड़ाई' ऐसे व्यंग्यों और आक्रोश से भरा है, जिसमें हालात को लेकर केवल विलाप नहीं आक्रोश भी है –

"बापू, अंबेडकर या मंडेला जैसे माली
डरते नहीं/मरते नहीं
अहिंसात्मक संघर्षो का/सबक सिखाते
हर युग में मुक्ति की घास उगाते।"[9]

'एक शब्द' कविता के माध्यम में कवि पिछड़े, असहाय, वंजित और बहुजन समाज के अन्दर क्रांति का विगुल बोना चाहता है और साथ ही साथ उस जन समुदाय को उनके अधिकारों के हक के प्रति सचेत भी करता है। वही 'खाली करो जंगल' कविता में प्रकृति और आदिवासी दुनिया की सहचर प्रेम को दर्शाते हुए यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे सरकार और पूंजीवाद जल, जंगल जमीन को ख़त्म कर रहे हैं -

"अब तुम्हरा नहीं रहा जंगल
न जमीन, ना जल
जारी हुआ है ऐसा फरमान
देश के आदिवासियों के लिए
फिर जाएँ किधर ..?"[10]

स्त्रीयां हमारे समाज की आधी-आबादी हैं। मानव समाज का निर्माण तथा विकास इनके समन्वय से संभव हो पाया है। संतोष पटेल की कविता संग्रह 'जारी है लड़ाई' में नारी यथार्त भूमि पर अवतरित हुई है। 'जारी है लड़ाई' कविता संकलन में स्त्री जीवन की विविध छबियां मौजूद हैं। 'प्रेम', 'प्रेम करना इतना आसन नहीं', 'और वर्षो पुरानी परंपरा टूट गयी' 'कुंठा', 'रैली' इत्यादि कविताओं में मानवीय संवेदना के स्वर मुखर हुए हैं –

"हृदय का उद्गार/बसंत बहार
अनमोल/अमूल्य/निर्मल/निच्छल
चांदनी से भी कोमल
फूलों की मुस्कान से सुकोमल/एक सशक्त बंधन
हृदय से हृदय का बांधने का/ढाई अखार में समेटे
सम्पूर्ण संबंधों की गरिमा की परिभाषा है प्रेम।"[11]

इस तरह देखा जा सकता है कि कवि संतोष पटेल अपनी दैनिक जीवन के तमाम व्यस्ताओं से भी समय निकल कर अपनी कविता संग्रह 'जारी है लड़ाई' में समय की बुनियादी समस्यायों से हमें ठीक-ठीक अवगत

कराते हैं। 'संघर्ष', 'घुटन', 'जगा दो', 'महानगरो की शोभा', 'एन जी ओ' और 'ढोंग' जैसी कविताएँ समाज में व्याप्त कुंठाओं, विद्रूपताओं एवं खोखलेपन को दर्शाती है –

"झुग्गी झोपड़ियाँ/एक प्रश्न चिन्ह
या विकास के चेहरे पर/एक चिंता की लकीर
केवल अखबारों में
पढने वाले करते हैं फ़िक्र।"[12]

उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह वंचित, दलित, असहाय और पिछड़े जन समुदाय की लड़ाई की कविता संग्रह है। जिसमें संतोष पटेल ने जीवन के विविध आयामों का चित्र प्रस्तुत किया है। जो सदियों से शोषण का शिकार हो रहा उसकी मुक्ममल आवाज बनकर कवि 'जारी है लड़ाई' में उस शोषण, अन्याय और भेद-भाव का खुलकर विरोध किया है। इस तरह 'जारी है लड़ाई' कविता संग्रह के माध्यम से कवि संतोष पटेल समाज में नई चेतना के साथ उस जन समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अशिक्षित और दिशाभ्रमित होने के कारण अंधविश्वास, रूढ़ीवाद और पुरानी परंपराओं को ढ़ो रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पटेल, संतोष, 'जारी है लड़ाई', नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 10
2. नेशनल जनमत पत्रिका – समीक्षा डॉ.राकेश कबीर
3. पटेल, संतोष, 'जारी है लड़ाई', नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ, 14
4. वही, पृष्ठ, 18
5. वही, पृष्ठ, 21
6. वही, पृष्ठ, 95
7. वही, पृष्ठ, 10
8. वही, पृष्ठ, 08
9. वही, पृष्ठ,101
10. वही, पृष्ठ, 29
11. वही, पृष्ठ, 52
12. वही, पृष्ठ, 85
13. अनिल कुमार (सम्पादक), 'हिन्दुस्तानी पत्रिका', त्रैमासिक पत्रिका, इलाहाबाद
14. कवि संतोष पटेल से कविता पर बातचीत
15. https://www.facebook.com/santosh.ibparishad